आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:14-09-14

अपने अमूल्य ज्ञान के खजानों से हम बच्चों को सम्पन्न कर, हमें स्वराज्य अधिकारी बनाने वाले, बापदादा ने कहा - व्यर्थ संकल्पों के विघ्नों से मुक्त होने की सहज युक्ति है निमित्त और ट्रस्टी भाव में रहना, निश्चिन्त और निश्चय बुद्धि बनना.

आज की मुरली में बापदादा ने हम ब्राह्मण बच्चों को कोन से व्यर्थ संकल्प आते है वह स्पष्ट समझाया है और उसके कारण हमारे ब्राह्मण जीवन में क्या विघ्न आते है और उसे कैसे पार करना है, उसकी युक्तियाँ भी बताई है, उसे एक बार पढ़कर हमारे में चेक करें.

- पुरुषार्थ में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाई नई देता और सोच में पड़ जाते है कि आगे क्या होगा? जिसके कारण तीव्रगति वा तीव्र पुरुषार्थी से सामान्य पुरुषार्थी बन जाते है. फिर कई थक जाते, कोई दिलशिकस्त हो जाते अर्थात अपने से नाउम्मीद हो जाते है और खुद को बेसहारा अनुभव करते है.

इसको पार करने कि युक्ति है - सेकेण्ड में स्वयं का स्वरूप अर्थात आत्मिक ज्योति स्वरूप और कर्म में निमित्त भाव का स्वरूप - यह डबल लाइट स्वरूप में स्थित होना. खुद को आत्मा समझ इस बेहद के ड्रामा में पार्टधारी हूँ, बाबा ने मुझे यह पार्ट बजाने को निमित्त बनाया है. यह आत्मिक-निमित भाव हमारे कई व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देता है तो हमें इसकी प्रैक्टिस करनी हैं.

- कई ब्राह्मणों को विनाश के बारे में बहुत व्यर्थ संकल्प चलते है जैसे कि बाबा ने कितने सालो पहले कहा था - तुम अगली दीवाली नहीं देखोगे और अभी इतने साल हो गये फिर भी कुछ भी हुआ तो नहीं. नामालूम विनाश होगा या नहीं होगा (ड्रामा पर विश्वास नहीं), भगवानुवाच ठीक है वा नहीं है (भगवान में निश्चय नहीं), दुनिया के आगे निश्चय से कहें वा नहीं कहे, गुप्त रहें वा प्रत्यक्ष होवें - जमा करें या सेवा में लगाये, प्रवृति को सम्भाले वा सेवा में लगें (स्वयं में निश्चय नहीं). समझा कैसे हमारे व्यर्थ संकल्प ही हमें ड्रामा में, बाबा में और स्वयं के निश्चय को हिला देता हैं.

बापदादा ने इसको पार करने कि सहज युक्ति बतलाते हुए कहा - स्वयं को ट्रस्टी समझ कर चलो. विनाश के लिए या स्वयं को प्रत्यक्ष करने से या सब को विनाश के बारे में बताने से, उसके रिज़ल्ट कि चिंता हमें नहीं करनी है. बाबा ने कहा और हमने किया - यहीं होना चाहिए. अगर बाप ने कहा है और हम कर रहे है तो जिम्मेदार बाप हो जाता हैं. इसे बुद्धि में रखने से हम सदा के लिए निश्चिन्त बुद्धि बन जायेंगे.

- सर्व प्रकार के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करने कि सहज युक्ति है - सदा निश्चिन्त और सदा निश्चय बुद्धि बनना.

सदा निश्चिन्त बुद्धि बनने के लिए ट्रस्टी भाव जीवन में अपनावों.

सदा निश्चय बुद्धि बनने के लिए हमें प्रैक्टिस करनी है कि में विश्व-कल्याणकारी बाप का बच्चा हूँ और यह मेरा सारे कल्प में सर्व-श्रेष्ठ कल्याणकारी ब्राह्मण जीवन हैं. मेरे हर कदम में पदमों की कमाई हो रही हैं. मेरे यह ब्राह्मण जीवन में जो भी समय पास्ट हुआ - अच्छा समय था, अभी जो समय जा रहा है - वह भी बहुत अच्छा जा रहा है और आगे जितना भी समय मेरे पास है - बहुत-बहुत अच्छा समय होगा.

ॐ शांति.